

एक जगह होने के लिए शिक्षा में कला के प्रतिनिधि के रूप में लाइब्रेरी

समीना मिश्रा

निकी जिओवानी की कविता 'अ लाइब्रेरी (केली मार्टिन के लिए)' में लाइब्रेरी एक जगह है -

टु सर्फ द रेनबो / सतरंगी लहरों पर सवार होने के लिए

टु सेल द ड्रीम्स / सपनों की उड़ान भरने के लिए

टु बी ब्लू / उदासी के लिए

टु बी जैज़ / उमंग के लिए

टु बी वंडरफुल / शानदार होने के लिए

टु बी यू / तुम्हारे होने के लिए

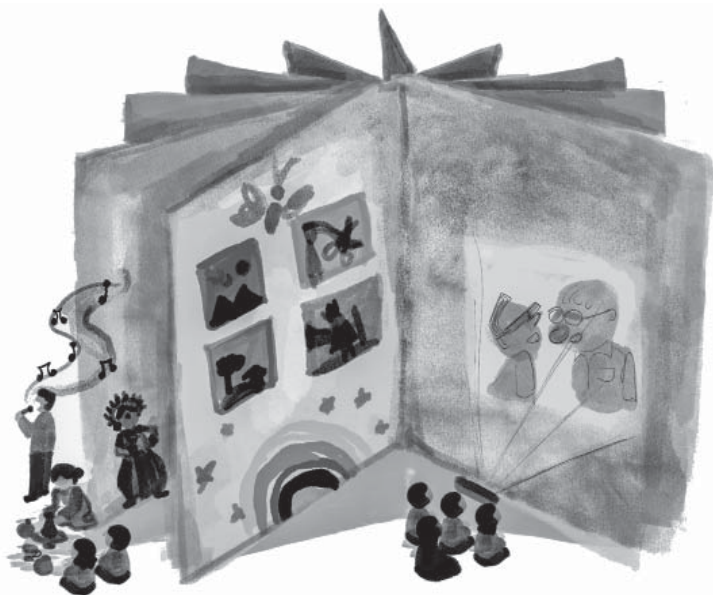
अ प्लेस टु बी / एक जगह होने के लिए

येह... टु बी / हाँ... होने के लिए

ये पंक्तियाँ तो कला के बारे में भी हो सकती हैं। क्या कला सतरंगी लहरों पर सवार होने और सपनों की उड़ान भरने में हमारी मदद नहीं करती? क्या कला हमें उदासी और उमंग बयान करने नहीं देती? क्या कला हमारे लिए यह मुमकिन नहीं करती कि हम - हो सकें? होना दिल और दिमाग, दोनों से जुड़ा है; यह एहसासों और विचारों का एक जटिल जाल-सा है। कला हमारी इन्द्रियों के ज़रिए इन दोनों को छूती है - हम जो कुछ देखते और सुनते हैं, वह हमें कुछ एहसास कराता है, और बदले में वह एहसास हमें सोचने के लिए

उकसाता है। इसे होता हुआ देखने का एक तरीका है - बच्चों के साथ पिक्चर बुक्स का इस्तेमाल।

लाइब्रेरी शिक्षक, जोएन सलडान्हा ने मिडिल-स्कूल के बच्चों के साथ *जामलो वॉक्स* (हिन्दी में अनुवादित: *जामलो चलती गई*) के इस्तेमाल के बारे में लिखा है। यह 2020 के लॉकडाउन में बच्चों के अनुभवों के बारे में एक चित्र-प्रधान किताब है। अपने ब्लॉगपोस्ट में, सलडान्हा बताती हैं कि बच्चों के बीच यह किताब पढ़ने से पहले, किस तरह उन्होंने बच्चों से लॉकडाउन के उनके अपने अनुभवों पर बातचीत करके गैर-बराबरी और



खोने के भाव से जुड़ी मुश्किल बातचीत के लिए सन्दर्भ स्थापित किया। फिर उन्होंने किताब के हर पन्ने पर वक्त गुज़ारा, बच्चों को प्रोत्साहित किया, न सिर्फ लिखे को पढ़ने के लिए बल्कि चित्रों को पढ़ने और उनकी व्याख्या करने के लिए भी। इससे मेल-बेमेल कई नज़रिए उभरे। भले ही बातचीत खुली-खुली ही रही, मगर बच्चों की प्रतिक्रियाओं में जो साफ ज़ाहिर है, वह है एहसासों और विचारों के बीच की अन्तर्क्रिया:

इस चित्र को देखकर मुझे लग रहा है कि मैं भी उसी सड़क पर चल रही हूँ। बहुत गर्मी है।

जामलो काम क्यों कर रही है? यह तो गैरकानूनी है न, आंटी?

आंटी, मैं सोचा करता था कि कहीं मेरे मम्मी-पापा ने लॉकडाउन मन से तो नहीं गढ़ा... राहुल के जैसे, मैं भी खिड़की पर खड़ा होता और झाँका करता कि बाहर क्या हो रहा है।

आंटी, यह किताब मुझे उदास कर रही है... मुझे लगता है कि मैं एक बिगड़ी हुई बच्ची हूँ।

मैंने पहले कभी इसके बारे में नहीं सोचा पर अब मैं सोच रही हूँ कि हम सबका एक नाता है, नहीं? हम सभी के बीच कुछ-न-कुछ तो समान है, भले ही हम सभी एक-जैसे न हों।

कला की काबिलियत

जब एक बच्ची (या वयस्क) किसी अनुभूति के साथ प्रतिक्रिया करती है

- खुशी, उदासी, डर, उमंग... कैसी भी अनुभूति - तो उससे एक समझ विकसित होने की शुरुआत मुमकिन होती है। रचनात्मक विचार कहाँ से आते हैं, जिस तरह इसके पीछे एक रहस्य का अंश होता है, उसी तरह एकदम सटीक प्रतिक्रिया जगाने का तरीका तय करना भी मुश्किल होता है। हालाँकि, ऊपर साझा की गई बच्चों की प्रतिक्रियाएँ इशारा करती हैं कि खिड़की पर खड़े किसी बच्चे का चित्र, कितनी आसानी-से, पढ़ने वाले के अपने अनुभव से एक कड़ी जोड़ सकता है, एक मिलता-जुलता अनुभव जहाँ वह भी लॉकडाउन की दुनिया में झाँका करता था।

ये प्रतिक्रियाएँ इशारा करती हैं कि मुश्किलों से जूझती एक बच्ची की दास्तान, पढ़ने वाले को ज़िन्दगियों के बीच का अन्तर दिखा सकती है और 'एक बिगड़ी हुई बच्ची' की तरह महसूस करा सकती है; हमें इन्सानियत के तौर पर क्या जोड़ता है, चित्र और लेख साथ मिलकर हमें ऐसे सवालों और विचारों की ओर धकेल सकते हैं। कला की यह अन्तर्निहित काबिलियत ही है - हमारी इन्द्रियों के साथ अन्तःक्रिया करने की, अनुगूँज विकसित करने की और चिन्तन को उभारने की - जो इस बात पर ज़ोर डालती है कि क्यों लाइब्रेरी को शिक्षा में कला का प्रतिनिधि होना चाहिए। जब एक लाइब्रेरी - या सीखने की कोई भी

जगह - कला के लिए अपने द्वार खोलती है, तो इससे इन्द्रिय और भावनात्मक अनुभूति के लिए भी द्वार खुलता है। और यही अनुभूति समालोचनात्मक चिन्तन की ओर ले जाती है। इससे कलाकृति के अर्थ और मूल्य को भी विस्तार मिलता है, एक परस्पर जुड़ाव का जन्म होता है, रचयिता और रचना से जुड़ने वालों के बीच, एक समुदाय का निर्माण होता है।

कला और लाइब्रेरी के रिश्ते के लिए नज़रिया बेहद ज़रूरी है। एक कला इतिहासकार, ईएच गॉम्ब्रिक, ने कहा था - "कला जैसी सचमुच कोई चीज़ नहीं होती। होते हैं तो बस कलाकार।" कला के रचयिताओं को प्राथमिकता देने का अर्थ आवाज़ों और अनुभवों की बहुलता को स्वीकारना है, और बुनियादी स्तर पर दुनिया की हमारी समझ को इससे आकार लेने देना है। किसी लाइब्रेरी की ताक पर बहुलता की सम्भावना भी रखी होती है - तब ही, जब इसके संग्रह का मार्गदर्शन एक समालोचनात्मक और आत्म-चिन्तनशील अभ्यास करे। इसी अभ्यास को और भी व्यापक होने की ज़रूरत है ताकि लाइब्रेरी कला के बेशुमार रूपों का भी भण्डारघर बन सके। किताबें कला हैं - वे कला के अन्य रूपों की ही तरह रचनात्मक प्रक्रियाओं और सवालों से उभरती हैं। तो यह महज़ एक और कदम है,



लाइब्रेरी में किताबों के परे कुछ शामिल करने का। फिल्मों का संग्रह शामिल करना, दीवारों पर कला प्रदर्शित करना, इनके इर्द-गिर्द गतिविधियाँ आयोजित करना, कलाकारों-अदाकारों को सदस्यों से मेल-जोल करने के लिए बुलाना - ये सब लाइब्रेरी में कला के विचार को विस्तृत करने के तरीके हैं। जिसकी ज़रूरत है, वह है एक ऐसा नज़रिया जो कर्म को दिशा दिखाए, वही नज़रिया जो उन सब में विकसित होगा जो लाइब्रेरी में आएँगे, लाइब्रेरी और उसके संग्रह से अन्तःक्रिया करेंगे।

जब हम शिक्षा में कला की बात करते हैं, तो यह याद रखना ज़रूरी है कि मकसद सभी को कलाकार में तब्दील कर देने का नहीं है, बल्कि

उनकी नज़र को कलात्मक रंग देने का है। कला और रचनात्मक अभ्यासों से जुड़ने के मौकों से एक रसिक के दृष्टिकोण - यानी कला की कद्र करने और कला से तृप्त होने की काबिलियत - को बढ़ावा मिलता है। कला दर्शक/श्रोता/खोजी को अपनी नज़र फिर से मिलाने, आत्म और अन्य के अनुभवों के बीच के सम्बन्ध खोजने, और जीने में निहित खूबसूरती, फिर चाहे वह अँधेरी या उदास किस्म की खूबसूरती क्यों न हो, के प्रति सजग रहने की इजाज़त देती है। लाइब्रेरी एक ऐसी जगह हो सकती है जो इन सम्भावनाओं को संग्रहित करती हो, इस पर ध्यान केन्द्रित करके कि वह कला क्या है जो साझा है और वे कौन-से रास्ते हैं जिनसे इसे खोजा जाता है।

लॉकडाउन में लाइब्रेरी अभ्यास

बच्चों के साथ मेरा काम कला के इस खिड़की और आईने नुमा पहलू पर केन्द्रित होता है, और कोशिश करता है कि उनके साथ बराबरी की भावना से अन्तःक्रिया करे जो हर किस्म के एहसासों का अनुभव करते हैं, अँधेरे एहसासों का भी। अनौपचारिक और औपचारिक, दोनों ही जगहों में, मैं बच्चों के साथ भाषा, चित्र और ध्वनि का इस्तेमाल आत्मचिन्तन और संवाद की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए करती हूँ। मैं कला और शिक्षा पर एक ऑनलाइन स्पेस, द मैजिक की सेंटर फॉर द आर्ट्स एंड चाइल्डहुड (The Magic Key Centre for the Arts and Childhood), भी चलाती हूँ, और हालाँकि यह कोई लाइब्रेरी नहीं है, तब भी मुझे इस तरह सोचना अच्छा लगता है कि एक लाइब्रेरी अभ्यास इसे गाइड करता है। मेरे लिए, इसके दो पहलू हैं - खोजबीन और संग्रहण (क्यूरेशन)।

मार्च 2020 में जब कोविड-19 लॉकडाउन का ऐलान हुआ था, मैंने एक ऑनलाइन आर्ट प्रोजेक्ट शुरू किया जिसमें मैं हर दिन एक कला अभ्यास/गतिविधि साझा करती, जिसे भागीदार अगले 24 घण्टों में पूरा करते। ये अभ्यास कविता लेखन, चित्रकारी, तस्वीरें खींचने से लेकर आवाज़ें और वीडियो रिकॉर्ड करने तक होते। कभी-कभार उन्हें गतिविधि करने से पहले कुछ पढ़ना या देखना

पड़ता। हर अभ्यास लॉकडाउन के विचार से जुड़ा होता, बच्चों से उनके और उनके आसपास के लोगों के अनुभवों का अवलोकन और उन पर चिन्तन करने का आग्रह करता। इन अभ्यासों के ज़रिए, बच्चे अपने अनुभव अभिव्यक्त करने के अलग-अलग रास्ते तलाश पाए। मुझे लगता है, इससे उनकी इस समझ में इज़ाफ़ा हुआ कि वे और पूरी दुनिया आखिर किस से गुज़र रहे थे। लॉकडाउन की आवाज़ों के बारे में लिखने के एक अभ्यास में, एक 12 वर्षीय ने खोने के एहसास को जागृत किया:

लॉकडाउन में मैंने सुनी
घड़ी की टिक-टॉक,
लॉकडाउन में मैंने सुनी
पंछियों की चहक।
लॉकडाउन में मैंने सुनी
दोपहरों की शान्त चुप्पी,
लॉकडाउन की रातों में मैंने सुनी
उल्लुओं की हूट।
किस तरह मैं उम्मीद करता हूँ
सुनने को डोरबेल - डिंग-डॉंग!

जो बच्चे लॉकडाउन आर्ट प्रोजेक्ट का हिस्सा थे, वे बेशक ऐसे बच्चे थे जिनके पास इंटरनेट और उपकरणों का विशेषाधिकार (या, प्रिविलेज) था, और साथ ही साथ अँग्रेज़ी-माध्यम की शिक्षा थी। इसलिए प्रोजेक्ट के लिए यह ज़रूरी था कि वह केवल आत्म पर केन्द्रित न होकर भागीदार बच्चों को व्यापक दुनिया की ओर देखने के



लिए भी प्रोत्साहित करे, अलबत्ता उनके लॉकडाउन के नज़रिए से। इसका अर्थ हुआ संसाधनों का - लेखों, कविताओं, फिल्मों का - एक नपातुला चुनाव, जो कभी-कभी प्रॉम्प्ट में मदद करे। उसी 12 वर्षीय ने, किसी अन्य के दृष्टिकोण से खुद को एक खत लिखने की गतिविधि के दौरान लिखा:

प्यारे रिद्धो,

जिस बिल्डिंग में तुम रहते हो, मैं उसके बाहर एक चाय की गुमटी पर काम करता हूँ। हो सकता है, तुम मुझे न जानते हो, पर मैं तुम्हें रोज़ स्कूल जाते हुए और पार्क में खेलते हुए देखता हूँ। कोरोना वायरस महामारी के कारण, मेरी पगार काटकर आधी कर दी गई है। मेरे माँ-बाप उत्तर प्रदेश में काम करते हैं और मैं उनसे सम्पर्क नहीं कर पा रहा।

मेरे घर में, जहाँ मैं अपने भाई के साथ रहता हूँ, खाने की किल्लत है।

मैं तुम्हें लिख रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम जानो लॉकडाउन में बाहरी दुनिया किससे गुज़र रही है। हो सकता है, तुम लॉकडाउन के दौरान खुश हो, मगर हर कोई तुम्हारे जितना खुश नहीं है।

- अर्जुन

पिछले सालभर से, 'द मैजिक की सेंटर' का काम हमारे सोशल मीडिया हैंडल के ज़रिए ऑनलाइन संसाधनों को साप्ताहिक रूप से शेयर करने और उनसे प्रभावित विचारों पर चिन्तन करने तक सीमित हो गया है। यह सोचते-सोचते कि हमारे द्वारा हर हफ्ते क्या पोस्ट किया जाए, मैंने कई किताबें, फिल्में, बच्चों की प्रतिक्रियाएँ,

कविताएँ, चित्र, पॉडकास्ट चर्चाएँ, और संग्रहित साक्षात्कार खोज निकाले हैं। सालभर के पोस्ट्स का संग्रह विविधता से भरा है, और साथ ही, जिज्ञासा और खोजबीन के जज़्बे से बँधा हुआ है। एक बेतरतीब कोशिश यह समझने की भी होती है कि कैसे अलग-अलग लोगों - वयस्क और बच्चों - ने कला के साथ अलग-अलग भूमिकाओं में अन्तःक्रिया की है। पोस्ट्स में एरिक कार्ल, केजी सुब्रह्मण्यम और माया एंजेलो जैसे कलाकारों की रचनाओं के साथ-साथ बच्चों की रचनाएँ - लेख, ऑनलाइन नाटक, या महज़ स्कूल के खेल के मैदान को याद करती हुई, नए साल की उनकी खाहिशों से जुड़ी, या उनकी खुशियों पर विचार करती बातचीत - भी शामिल हैं।

कला की सांत्वना

यह है ज़िन्दगी - कला के चश्मे से देखी गई ज़िन्दगी, सार और रूप का संगीत - जो हमें याद दिलाती है कि जीने का मतलब है कौतूहल से भरे रहना, गौर करना और चिन्तनशील रहना। कला यह करती है। लाइब्रेरी यह करती है।

विंसेंट वैन गॉग ने कहा था, “कला उनके लिए सांत्वना है जो ज़िन्दगी से टूट चुके हैं।” और हम ऐसी अनगिनत कहानियाँ जानते हैं जहाँ किस तरह लाइब्रेरियों ने उन्हें बचाया जो ज़िन्दगी से टूट चुके थे। एक लाइब्रेरी से बेहतर जगह और कहाँ होगी, खूबसूरती और सत्य की उस अनेकता को अनुभव करने के लिए जो कला हम तक लाती है।

समीना मिश्रा: नई दिल्ली में एक वृत्तचित्र फिल्म निर्माता, लेखक और शिक्षक हैं, जिनकी बच्चों के लिए और बच्चों से सम्बन्धित मीडिया में विशेष रुचि है। उनका काम बचपन, पहचान और शिक्षा के नज़रिए से भारत में पलने-बढ़ने के अनुभवों को प्रतिबिम्बित करता है।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: अतुल वाधवानी: *एकलव्य* की शिक्षा साहित्य टीम के साथ सम्बद्ध हैं। साथ ही, *संदर्भ* पत्रिका के साथ भी जुड़े हैं।

सभी चित्र: पूजा मेनन: *एकलव्य*, भोपाल में बतौर जूनियर ग्राफिक डिज़ाइनर काम किया है। वर्तमान में, स्वतंत्र रूप से चित्रकारी कर रही हैं।

यह लेख *टीचर प्लस* पत्रिका के अंक दिसम्बर, 2021 से साभार।

सन्दर्भ:

Giovanni, Nikki, A Library (For Kelli Martin), via brainpickings.org
<https://www.brainpickings.org/2015/12/11/nikki-gioannis-poems-library-librarians/>
 Mishra and Aziz, Jamlo Walks, 2021, India Puffin
 मिश्रा और अज़ीज़, जामलो चलती गई, 2021, एकलव्य
 Saldanha, JoAnne, Journeying with Jamlo, July 2021
<https://www.mythaunty.com/post/journeying-with-jamlo>